पालि साहित्य का इतिहास

प्रश्न—पालि शब्द की व्याख्या करते हुए इस सम्बन्ध में प्राप्त विभिन्न मतों का सर्वांगीण विवेचन कीजिए तथा यह भी बताइये कि सर्वाधिक समीचीन मत कौन-सा है ?

उत्तर—प्राचीन काल में संस्कृत भाषा की गौरव गरिमा निर्विवाद रूप से मानी जाती रही है किन्तु जब यह भाषा व्याकरण के जटिल नियमों में बँध कर वर्ग विशेष के लिए ही सीमित हो गई तो सामान्य जनता में एक अन्य जन-भाषा का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। व्याकरण की दृष्टि से दोनों भाषाएँ नितांत भिन्न सी हो गई थीं। ५०० ई० पू० में यह अन्तर हमें स्पष्ट रूप में दीख पड़ता है। तदनन्तर बुद्ध एवं महावीर स्वामी जैसे महापुरुष विश्व के प्रांगण में प्रादुर्भूत हुए और उन्होंने देखा कि संस्कृत को विशेष रूप से महत्व प्राप्त है। साथ ही वह एक सीमित वर्ग की भाषा भी थी। किन्तु ये महापुरुष अपने उपदेश जनता तक पहुँचाने को उत्सुक थे अतः तत्कालीन समाज में व्याप्त ब्राह्मणों के मिथ्याडम्बरों को खण्डित करने के लिए उन्होंने अपने उपदेश जन-सामान्य की भाषा में दिए। इस कारण तत्कालीन सामान्य जन-भाषा का प्रचुर प्रचार भी हुआ और महत्व भी बढ़ा। संस्कृत के समानान्तर प्रचलित इस भाषा अर्थात् पालि भाषा का प्रयोग अत्यन्त पुराना नहीं कहा जा सकता। इसके लिए संस्कृत-साहित्य का पर्यालोचन महत्वपूर्ण है।

१३०० अथवा १४०० ईसा पूर्व 'पालि' शब्द का प्रयोग भाषा-विशेष के अर्थ में नहीं मिलता है।

पालि शब्द का क्या अर्थ है ? यह किस प्रदेश की भाषा थी ? यह प्रश्न आज भी विवाद का विषय है। इस सम्बन्ध में प्राच्य व पाश्चात्य सभी मतों में विभिन्नता है, फिर भी विभिन्न कोषों में पालि शब्द की व्युत्पत्ति प्राप्त होती है।

'अभिधानप्पदीपिका' में पालि शब्द का अर्थ है—पंक्ति।

'पंति वीथ्यावलिस्सेनि पालिरेखा च राजि च।'

संस्कृत में 'पंक्ति' का अर्थ 'मूल ग्रन्थ' के वाचक के रूप में ग्रहण किया जाता है। महाभाष्य की पंक्ति, साहित्यदर्पण की पंक्ति आदि ऐसे प्रयोग इसकी ओर संकेत करते हैं। पालि शब्द की निष्पत्ति 'पाल' या 'पा' धातु से मानी गई।

'पा पालेति रक्खनीति पालि'—रक्षा करने वाली, पालन करने वाली पालि है।

संस्कृत की ही भाँति बौद्ध ग्रन्थों में पालि शब्द 'मूल ग्रन्थ' के लिए प्रयुक्त हुआ है। 'महावंश' में बुद्धघोष की अट्ठकथाओं को लक्ष्य करके कहा गया है कि—'थेरियाचरिये सब्बे पालिंविय तमग्गहुं'। और 'जम्बूदीपे पन पालिमत्तंयेव अत्थि अट्ठकथा पन नात्थि।

अर्थात् जम्बूदीप में 'पालिमात्र ही थी अर्थकथा नहीं थी।' इन उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि 'पालि' शब्द मूलग्रन्थ के अर्थ में प्रयोग किया जाता था। इसके पश्चात् मूलग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य ग्रन्थ भी पालि शब्द से ही बोधित होने लगे। बौद्धों के मूलग्रन्थ है—'त्रिपिटक' और उनसे सम्बन्धित रचनाएँ है—'अट्ठकथा' (अर्थकथा)। इसीलिए इनसे सम्बन्धित ग्रन्थों का बोध भी पालि से ही होने लगा।

किन्तु मूलग्रन्थ वाचक शब्द-विशेष, भाषा-विशेष के लिए कैसे प्रयुक्त होने लगा? यह प्रश्न उठ खड़ा होता है। पालि शब्द से मूलग्रन्थ का बोध होता ही था, शनैः शनैः 'पालि' ने इसके साथ-साथ पालि भाषा का अर्थ देना भी प्रारम्भ कर दिया। इस भाषा में मूल ग्रन्थ लिखे गए थे। इस प्रकार 'पालि' शब्द से मूलग्रन्थ और भाषा का बोध होने लगा।

'पालि' शब्द को भाषा के अर्थ में प्रयुक्त होने का अवसर कब मिला, यह निश्चित करना सरल नहीं है। 'पालि' शब्द को सर्वप्रथम प्रयुक्त करने वाले थे, आचार्य बुद्धघोष। 'अट्ठकथाओं' और उनके 'विसुद्धिमग्ग' में इसके पर्याप्त उदाहरण मिलते हैं। आचार्य बुद्धघोष ने दो अर्थों में पालि शब्द का प्रयोग किया है—'बुद्ध वचन' के अर्थ में, और 'पाठ' के अर्थ में।

अनेक अवसर ऐसे आए हैं जब आचार्य बुद्धघोष ने 'पोराण अट्ठकथा' से विभिन्नता दिखाने के लिए मूल त्रिपिटक के अंशों को उद्धृत किया है, ऐसे स्थलों पर पालि शब्द बुद्ध वचन या मूल त्रिपिटक की ही अभिव्यक्ति करता है। 'विसुद्धिमग्ग' में इसका उदाहरण देखा जा सकता है—

'ईमानि ताव पालियं अट्ठकथायं पन.........'

अर्थात् 'ये तो पालि में हैं किन्तु अट्ठकथा में तो.....।' इसके अतिरिक्त—'नेव पालियं न अट्ठकथायं दिस्सति।' अर्थात् 'न पालि में है और न अर्थ कथा में ही।'

इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं त्रिपिटक की व्याख्या में पाठान्तरों का निर्देश मिलता है, ऐसे स्थलों पर पालि शब्द से मूल त्रिफ्टिक के 'पाठ' को द्योतित किया है।

चौथी शताब्दी में 'दीपवंश' नाम का एक ग्रन्थ मिलता है। इसमें भी 'पालि' शब्द बुद्ध वचन को ही द्योतित करता है। सिंहल देश में दोनों ही अर्थों में पालि शब्द का प्रयोग मिलता है।

'महावंश' नामक ग्रन्थ में भी इस का अर्थ 'बुद्धवचन' ही लिया गया। १३०० ई० में इस ग्रन्थ का परिवर्द्धित संस्करण 'चूलवंश' के नाम से प्रकाशित हुआ इसमें आचार्य बुद्धघोष के ही समान दोनों अर्थों में पालि शब्द प्रयुक्त है।

आचार्य धम्मपाल (५००-६०० ई०) ने 'परमत्थदीपिनी' में 'पालि' शब्द मूल त्रिपिटक के 'पाठ' के अर्थ में ही प्रयुक्त किया है।

उदाहरणार्थ—'अयाचितो ततागच्छीति—आगतो ति पियालि।'

इसके साथ-साथ बुद्ध वचन के अर्थ में भी 'पालि' शब्द प्रयुक्त हुआ है।

'सद्दनीति' में पालि शब्द का प्रयोग मूलपाठ या पंक्ति अर्थ में अनेकशः हुआ है, उसमें उदाहरणार्थ अनेक वाक्य है—'अयायं पालि। अत्र इमा पालियो।' आदि का पालियो दिस्सन्ति। आदि-आदि। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि पालि शब्द बौद्धों के मूल ग्रन्थ त्रिपिटकों के अर्थ में प्रयोग किया जाता था। धीरे-धीरे इसने पारम्परिक रूप ग्रहण कर लिया—

'एते पालिमुत्तकनयेन बुद्धता गन्थातरानि वुच्चति।' (सासनवंश)

उपर्युक्त उपलब्धियों के आधार पर अनेक मान्यताएँ स्थापित हो गईं। इनमें से तीन मान्यताएँ ही प्रधान रूप से है—पहले मत वाले 'परियाय' शब्द से व्युत्पन्न मानकर इसका अर्थ लेते है। दूसरे मतावलम्बी 'पाठ' शब्द से व्युत्पत्ति स्वीकार करते हैं, और तीसरे मतानुयायी संस्कृत शब्द मानकर 'पंक्ति' अर्थ को ग्रहण करके विवेचना करते हैं—

(१) 'पालि' को 'परियाय' शब्द से निष्पन्न मानने वाले हैं भिक्षु जगदीश काश्यप। त्रिपिटकों में 'धम्म परियाय' या मात्र 'परियाय' शब्दों का प्रयोग मिलता है, जिसका अर्थ है 'बुद्ध के उपदेश'। सामञ्जफल सुत्त में इसका उदाहरण प्राप्त है—भगवता अनेन परियायेन धम्मो पकासितो।'

अर्थात् 'भगवान ने अनेक परियायों से (उपदेशों) से धर्म को प्रकाश दिया। ब्रह्मजाल सुत्त में भी—'को नामो अय भन्ते धम्मपरियायोति।' इसी अर्थ को प्रकट करता है।

कालान्तर में यही परियाय शब्द 'पलियाय' रूप में परिवर्तित हो गया, इसका उदाहरण अशोक के भाब्रू शिलालेख में मिलता है—

इमानि भन्ते ! धम्मपलियायानि विनय एतान भन्ते.................... सुनमुच पधालेयेयुच।

यह पलियाय, भी 'पालियाय' वन गया और इसका संक्षिप्त रूप 'पालि'। स्पष्टतः यह बुद्धवचनों के लिये ही प्रयुक्त होता था। 'दीघनिकाय-पालि', 'उदान-पालि' 'पाचित्तिय पालि' आदि से 'बुद्धवचनयुक्त ग्रन्थ' तात्पर्य ही अभीष्ट है। भिक्षु जगदीश काश्यप के इस मत की स्थापना हमें उनके 'पालिमहाव्याकरण' नामक ग्रन्थ में उपलब्ध होती है। यह मत सर्वाधिक प्रामाणिक मत माना जाता है।

(२) एक अन्य सिद्धान्त है संस्कृत के 'पाठ' शब्द से 'पालि' की व्युत्पत्ति स्वीकार करना। इस मत के प्रतिष्ठापक हैं—भिक्षु सिद्धार्थ। भगवानबुद्ध से पूर्व ब्राह्मणों द्वारा जो वेद-पाठ किया जाता था, वह बुद्ध के काल में भी प्रचलित था। बुद्ध-काल में अनेक वेद पाठी ब्राह्मण बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गए। साथ ही वे अपने

कुछ पूर्व पारम्परिक संस्कारों को भी ग्रहण करके लाए जो कि स्वाभाविक था। बुद्ध-वचनों को उन्होंने 'पाठ' शब्द की संज्ञा प्रदान कर उसे इस अर्थ में प्रयुक्त किया। किन्तु पाठ शब्द को उसी रूप में न लेकर उसका 'पाल' रूप कर दिया गया, जो कि कालान्तर में 'पालि' रूप में परिवर्तित हो गया। यह 'पालि' शब्द अपने साथ उस अर्थ को भी लेकर चला। भिक्षु सिद्धार्थ ने पालि शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार बताई है कि—पाठ से पालल < पालि। किन्तु ऐसा प्रयोग कहीं भी न मिलने के कारण यह ऐतिहासिक रूप से अमान्य ही है।

(३) तीसरा मत पं० विधुशेखर भट्टाचार्य का है—इन्होंने पंक्ति अर्थ को लिया है। 'पालि भाषा और साहित्य' ने भी इस मत को स्वीकार किया है।

'तन्ति बुद्धवचनं पन्ति पालि'—यह उदाहरण प्रसिद्ध पालिकोश 'अभिधान प्पदीपिका' से लिया जा सकता है 'पालि' शब्द का अर्थ बुद्धवचन और पंक्ति दोनों ही है। अम्बपालि, दंतपालि, में प्रयुक्त पालि शब्द भी पंक्ति अर्थ को ही उद्भासित करता है। 'पंक्ति से तात्पर्य है, ग्रन्थ की पंक्ति। बुद्धघोष ने भी इसी अर्थ को लिया है।

किन्तु भिक्षु जगदीश काश्यप ने इस मत का खंडन किया है तथा इसे अपूर्ण माना है।

(४) कुछ विद्वान् 'पल्लि' (गाँव) शब्द से पालि की निष्पत्ति मानते हैं। वैदिक और लौकिक संस्कृत के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह भाषा गाँव की भाषा थी।

डॉ० भोलानाथ तिवारी तथा श्री देवेन्द्रनाथ आचार्य ने इसकी आलोचना करते हुए इसे मान्य नहीं माना। तिवारी जी के अनुसार 'पल्लि' से 'पालि' की निष्पत्ति कुछ ठीक नहीं बैठती क्योंकि यह प्रवृत्ति बहुत बाद में आई थी। आचार्य जी ने भी इसी प्रकार की कठिनाइयों को स्वीकार किया है कि पूर्व स्वर दीर्घ होना और का लोप होना प्रथम प्राकृत काल की प्रवृत्ति के प्रतिकूल है। इसके अतिरिक्त उन्होंने एक और आपत्ति स्वीकार की कि पालि गाँव की भाषा थी तो उसका प्रचार व प्रसार बौद्ध उपदेशों के माध्यम से देश-विदेशों में कैसे हुआ?

अतः यह मत स्वीकार नहीं किया गया।

(५) "'पालि' को सर्वाधिक प्राचीन प्राकृत मानने वाले विद्वान हैं—भण्डारकर तथा वाकरनागल। इसी प्राकृत शब्द से ही पालि रूप सामने आया। इसके लिए अत्यन्त ही दूरस्थ कल्पना की गई है—प्राकृत < पाकर < पाअड़ < पाअल < पालि। यह तर्कसंगत भी नहीं है और मात्र कल्पनाश्रित होने के कारण मान्य भी नहीं है।

(६) पाल् रक्षणे धातु से पालि शब्द की निष्पत्ति मानी है कौसाम्बी नामक विद्वान ने। पालि भाषा द्वारा बुद्धवचनों को सुरक्षित रखा गया, इस आधार पर यह मत तर्कसंगत प्रतीत होता है।

(७) संस्कृत शब्द—'प्रातेय' या 'प्रालेयक' (पड़ोसी) से भी पालि शब्द की व्युत्पत्ति सिद्ध करने का व्यर्थ प्रयास श्री महांगीरदार जी ने किया।

(८) कुछ विद्वानों ने 'पलाश' शब्द से 'पालि' की निष्पत्ति माना है। 'पलाश' मगध का ही दूसरा नाम था। यद्यपि प्राचीन काल में देश विशेष के आधार पर भाषा का नामकरण मिलता है—बंगाली, गुजराती आदि ऐसे ही उदाहरण हैं किन्तु 'पालि' के साथ कोई स्थान विशेष सम्बन्ध नहीं है। पाटलीपुत्र की भाषा 'पाटलि' से 'पालि' की निष्पत्ति कल्पना के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

(९) कुछ विद्वानों ने 'पेलेस्टाइन' अथवा 'पलेटिन' प्रदेश की भाषा को ही 'पालि' नाम से स्वीकार किया है। किन्तु यह कल्पनाएँ कोई ठोस आधार प्रस्तुत नहीं करतीं।

(१०) डॉ० मैक्सवेलेसर ने 'पाटलीपुत्र' से 'पालि' शब्द को निष्पन्न माना है। 'पाटली' का ही संक्षिप्त रूप है 'पालि'। इनके इस मत का आधार हैं 'ग्रीक में पाटलिपुत्र को 'पालिब्रोथ' लिखा जाना। किन्तु यह नियम-विपरीत होने के कारण सम्भव नहीं माना जा सकता।

(११) श्रीमती रायस डेविड्स के अनुसार जब त्रिपिटक लिखे नहीं गए थे तो पालि या पंक्ति शब्द से अर्थ था—पठित पंक्ति। लिखित रूप में आने पर लिखित पंक्ति से अर्थ लिया जाने लगा होगा।

(१२) ए० वेरिमेडन कीथ महोदय के अनुसार—

"The speech of Buddha, which is assumed to be reproduced in the canon, was doubtless the educated lingua franca which have been devised for the needs of intercourse of learned men in India."

अर्थात्—बुद्ध-भाषा जो कि त्रिपिटक में आती है, निस्सन्देह शिक्षित समाज की बोलचाल की भाषा थी, जिसका गठन भारत के शिक्षित समुदाय के व्यवहार की आवश्यकता की दृष्टि से ही हुआ था।

(१३) एच० पी० बुद्धदत्त धारा के अनुसार—

"Pali is the language in which the oldest Buddhist texts were composed. It originated in the ancient country of Magadha, which was the kingdom of Emperor Ashok and centre of Buddhist learning during many centuries."

पं० बटुक नाथ शर्मा ने भी 'पालि जातकावलि' की भूमिका में लिखा है कि 'पालि भाषा है जिसमें बौद्ध ग्रन्थ लिखित हैं। पहले मूल ग्रन्थ तथा बाद में मूल ग्रन्थ की भाषा के अर्थ को द्योतित करने लगा।'

निश्चित रूप से सभी मत-मतान्तरों का विवेचन करने के पश्चात् पं० बटुक नाथ जी के मत से ही सहमत होना पड़ता है कि, पालि भाषा है। बौद्धों के धर्म ग्रन्थ इसी भाषा में लिखे गए। पहले यह केवल मूल ग्रन्थों की परिचायिका थी किन्तु कालान्तर में मूल ग्रन्थों की भाषा भी इससे द्योतित होने लगी।